अगस्त 2024, अंक 10

cinemahaul

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

अतिथि संपादक
रविराज पटेल

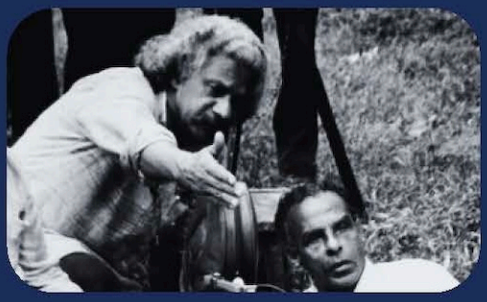

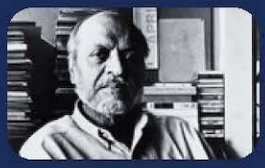

पैरलल सिनेमा

असीम सिन्हा, अजय ब्रह्मात्मज, अश्वनी सिंह, अनंत, अनीश अंकुर, अमिताभ वर्मा, आशीष अविकुन्तक, ईशान शर्मा, ओपी श्रीवास्तव, कमल शर्मा, जवरीमल्ल पारख, जितेंद्र कुमार 'जीतू', डॉ. महेंद्र प्रजापति,डॉ. मनीषा प्रकाश, डॉ. प्रियंका मिश्र, डॉ. रक्षा गीता, डॉ. सुनीता, डॉ. नीलम रानी, डॉ. सुरभि विप्लव, डॉ. मृत्युंजय प्रभाकर, डॉ. संदीप कुमार दुबे, डॉ. कुमार विमलेन्दु सिंह, डॉ. स्नेहाशीष वर्धन, दीपांकर सरकार, फ़रीद ख़ाँ, मुरली मनोहर श्रीवास्तव, प्रो. हितेंद्र पटेल, प्रो. दिव्या गौतम, यतीश कुमार, राकेश कायस्थ, रवि यादव 'रवि', विनय कुमार, विनोद अनुपम, विवेक रंजन सिंह, शोभा अक्षर, सूर्यन मौर्य, सृष्टि उपाध्याय, संजीव श्रीवास्तव, सुदीप्त श्रीवास्तव, सैयद एस तौहीद

आवरण: आर वर्क

अगस्त, 2024

अंक 10

सिनेमाहौल

फ़िल्मी ईज़ीन

अतिथि संपादक

रविराज पटेल

कवर डिज़ाइन: रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 6

सम्पादकीय 8

समानांतर सिनेमा की विकास यात्रा और संपादन की चुनौतियां 12
असीम सिन्हा

वनराज भाटिया: समानांतर सिनेमा के संगीतकार 22
अजय ब्रह्मात्मज

सिनेमा में यथार्थ की दुनिया और उसका तकनीकी पक्ष 32
अश्वनी सिंह

'बंबइया फिल्म ही बनानी थी तो 'तीसरी कसम' जैसे विषय को लेते ही क्यों? 42
अनंत

अपनी स्वतंत्र दावेदारी प्रस्तुत कर रहीं हैं महिला फिल्मकार 52
अनीश अंकुर

बासु चटर्जी! उर्फ़ हमारे प्रिय बासु दा 67
अमिताभ वर्मा

In Search of a Genealogy: Experimental, Avant-Garde or Prayoga? 71
Ashish Avikunthak

भारत में समानांतर सिनेमा 86
ईशान शर्मा

भारत में समानांतर सिनेमा 94
ओ पी श्रीवास्तव

समानांतर सिनेमा और उसके पैरोकार 113
कमल शर्मा

सिनेमा की मुख्यधारा बनाम समानांतर सिनेमा 130

जवरीमल्ल पारख

मैथिली सिनेमा: एक नई राह 145
जितेन्द्र नाथ जीतू

कहानी बनाम समय : जीवन के गहन अर्थों को तलाशती मणि कौल की फिल्में 148
डॉ. मनीषा प्रकाश

समाज का सिनेमा: समानांतर सिनेमा 156
डॉ. प्रियंका मिश्र

'सार्थक' फ़िल्मों का हिंदी सिनेमा 172
डॉ. रक्षा गीता

समानांतर सिनेमा : 21वीं सदी और स्त्री 185
डॉ॰ सुनीता

मनोरंजन पर कैसी बंदिश ! 195
डॉ. नीलम रानी

हिंदी समानांतर सिनेमा की अभिनय शैली 216
डॉ. सुरभि विप्लव

मलयालम सिनेमा: भारत के भविष्य का सिनेमा 228
डॉ. मृत्युंजय प्रभाकर

गौतम घोष: भद्रलोक में जनलोक के दुर्लभ चितेरे 237
डॉ संदीप कुमार दुबे

समांतर सिनेमा : प्रतिरोध की पृष्ठभूमि 248
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

भारतीय न्यू वेव या समानान्तर सिनेमा के साथ भाषा और साहित्य की यात्रा 262
डॉ॰ कुमार विमलेन्दु सिंह

बिहार का फिल्म प्रोत्साहन नीति 2024 की पटकथा 272
डॉ. स्नेहाशीष वर्धन

Adoor Gopalakrishnan’s Kodiyettam (The Ascent, 1978) The Soaring Spirit of Naivety 277
Dipankar Sarkar

समानांतर सिनेमा की कथावस्तु 283
फ़रीद ख़ाँ

समानान्तर फिल्मों के निर्माता-निर्देशक 292
मुरली मनोहर श्रीवास्तव

समानांतर सिनेमा: एक बौद्धिक खुराक है 300
प्रो. हितेंद्र पटेल

विभाजन की त्रासदी: महिलाओं पर सांप्रदायिक हिंसा की सिनेमाई और साहित्यिक अभिव्यक्ति 310
प्रो. दिव्या गौतम

श्वेत क्रांति और समानांतर सिनेमा – “मंथन” एक प्रयोग 314
यतीश कुमार

जिन्हें नाज़ है हिंद पर वो कहां हैं? 323
राकेश कायस्थ

अर्थपूर्ण सिनेमा समाज को जागरूक करता है 334
अशोक मिश्रा

समय के साथ हिन्दी सिनेमा 354
विनय कुमार

ठहर सी गई भुवन सोम की परंपरा 361
विनोद अनुपम

समानांतर सिनेमा के सारथी 367
विवेक रंजन सिंह

धुँधला पड़ता, चश्मे के पार का संसार 372
शोभा अक्षर

समांतर सिनेमा में फ़िल्म संस्थान पुणे का योगदान 379
सूर्यन मौर्य

समानांतर सिनेमा समाज के रहस्यमयी गाँठों को खोला है 386
सृष्टि उपाध्याय

ऐसे बनी फ़िल्म 'संगम' 392
संजीव श्रीवास्तव

समानांतर सिनेमा की समकालीन अभिव्यक्ति 402
सुदीप्त श्रीवास्तव

ऋत्विक घटक 'मेघे ढाका तारा' बनकर आज भी जीवित हैं 409
सैयद एस तौहीद

मेरी बात

सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन का अगस्त अंक आपके स्क्रीन पर है। इस बार का आवरण विषय पैरलल सिनेमा है। इस अंक का संपादन रविराज पटेल ने किया है।

जुलाई और अगस्त महीने में अपने लंबे यूरोप प्रवास के कारण मैं फ़िल्म ईज़ीन के प्रकाशन का क्रम बनाए नहीं रख सकता था। जुलाई अंक की जिम्मेदारी मैंने गीताश्री को सौंपी थी। उन्होंने बखूबी 'साहित्यकारों का सिनेमा' अंक निकला। अगस्त अंक का विषय रविराज और मेरी सहमति से चुना गया था। मुझे पूरा विश्वास था कि रविराज इसे पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ संपन्न करेंगे। उनकी मेहनत इस अंक में दिख रही है। मुझे खुशी है कि मेरा विश्वास सही निकला।

इस अंक में नए और अनुभवी लेखकों ने योगदान किया है। पैरलल सिनेमा के तमाम पक्षों को उन्होंने अपने तरीके से विवेचित और विश्लेषित किया है। यह अंक पैरलल सिनेमा की बहुआयामी झलक देगा।

इस अंक के साथ सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन के 10 अंकों का सफर पूरा हुआ। फ़िल्म ईज़ीन का अगला अंक फिल्मों के किरदारों पर है।

हमेशा की तरह लेखकों और नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा का समर्पित सहयोग मिला।

खुशी की बात है कि पाठक भी सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन के अंको को लगातार देख और खरीद रहे हैं। मुझे यकीन है कि समय के साथ पाठकों की संख्या बढ़ेगी।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें!

अजय ब्रह्मात्मज

मुंबई

28 अगस्त 2024

सम्पादकीय

नमस्कार! आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ विशेष शुक्रिया अजय ब्रह्मात्मज सर का। जिन्होंने भरोसा किया कि 'सिनेमाहौल' जैसी गम्भीर और प्रतिष्ठित पत्रिका का 'अतिथि सम्पादन' की ज़िम्मेदारी निभा पाऊँगा। कितना निभा पाया। यह आप पाठकगण कर तय करेंगे। संभव है कि मेरी पहुँच मानक स्तर तक नहीं हुई हो। लेकिन मेरा प्रयास एक पठनीय और संग्रहणीय अंक बनाने का ज़रूर रहा है। प्रतिफल आपके ही हाथों में है।

लेखकों से भरपूर सहयोग मिला है। मैं इस बात से भी बेहद संतुष्ट हूँ कि जिन महनुभवों से आलेखीय योगदान नहीं भी मिला, उन्होंने भी मुझसे बातचीत कर मेरा मार्गदर्शन करते हुए हौसला बढ़ाया है। कह सकता हूँ कि मुझे अपेक्षा से अधिक स्नेह मिला। आप सभी को मेरा आदर पहुँचे, स्नेह बना रहे।

इस अंक की विशेषता, इसका आवरण विषय है- 'समानांतर सिनेमा/ पैरलल सिनेमा'। इस विषय पर संकलित लेखों का अभाव मैं व्यक्तिगत तौर पर महसूस करता रहा हूँ। सिनेमाहौल का यह अंक इस कमी को पूरी करने की कोशिश की है। नवोदित लेखकों से लेकर वरिष्ठ एवं अनुभवियों के योगदान से यह अंक तैयार हो सका। उम्मीद करता हूँ समानांतर सिनेमा के रेखांकन और मूल्याँकन में सिनेमाहौल का यह प्रयास आपको ज़रूर लाभान्वित करेगा।

इस अंक की तैयारी करने के दौरान मैंने लगभग सौ लेखकों से संपर्क किया होगा। आधे से भी कम लेखकों का आलेख प्राप्त हुआ। व्यावहारिक तौर पर देखा जाय तो औसतन यही होता भी है। निजी व्यस्तताओं के आगे अभिव्यक्ति को विवश होना पड़ता है। बावजूद उसके इस अंक को चालीस लेखकों का आलेख प्राप्त हुआ। जो सिनेमाहौल के विगत अंकों के मुक़ाबले में सबसे अधिक है। इस अनुभव के आधार पर मैं भरोसे से कह सकता हूँ कि एक डरे हुए व्यक्ति में भी सम्भावनाएँ हो सकती हैं। मुझे बिल्कुल विश्वास नहीं था कि इतना समृद्ध संकलन तैयार हो पाएगा। मैं शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने मेरे आग्रह को न केवल गंभीरता से लिया बल्कि मेरी जानकारियों को भी समृद्ध किया।

मैं बिहार से हूँ। प्रसंगवश बताते चलूँ कि पिछले महीने यानी 19 जुलाई 2024 को बिहार फ़िल्म प्रोत्साहन नीति को राज्य सरकार द्वारा केबिनेट मंज़ूरी मिल गई है। लम्बे अरसे से इस नीति का इंतज़ार हो रहा था। अब प्रतीक्षा समाप्त हुई। नीति का स्वागत है। लेकिन चिन्ताएँ कम नहीं हुई हैं। कारण, बिहार के फ़िल्म नीति और पिछले चार दशक पूर्व से स्थापित बिहार राज्य फ़िल्म विकास एवं वित्त निगम के बायलॉज में बहुत अंतर नहीं है। फ़िल्मकारों, सिनेमाघरों के विकास के लिए प्रोत्साहन सहयोग का प्रावधान चालीस साल पहले से है। बावजूद उसके कोई विकास नहीं हुआ। नई नीति को भी उसी निगम से संचालित होना है। सरकार और उनके लोगों को ये समझना चाहिए कि किसी राज्य या क्षेत्र का विकास सिर्फ़ नीतियों से नहीं बल्कि नियत से होता है। नियत का क्या कहें- जितने लोग, उतनी नियत। एक शिखर पर पहुँचना चाहता है। दूसरा शून्य तक। दुर्भाग्य है कि इस उतार चढ़ाव से बिहार हमेशा दैन्यता का शिकार होता रहा है। उम्मीद

करता हूँ कि इस नीति के साथ सौभाग्य की रेखाएँ समृद्ध होंगी। सरकारें किसी भी दल की हो। अधिकारी किसी भी मानसिकता के हों। सांस्कृतिक गतिविधियों में गतिरोधक रवैये नहीं अपनाएँगे। तकनीकी कार्यशैलीयों का विकास होगा। बिहार के कथा पटकथा बने तो बेहतर होगा। विभाग के वरीय अधिकारीयों से निवेदन रहेगा कि वे इस नीति के प्रति संवेदनशीलता ज़रूर बनाए रखें। कुर्सी और आलीशान चेंबर के आवरण से परे व्यवहार करें। बिहार के हित में सबसे अधिक पसीना उन्हें ही बहाने होंगे। तभी नीति का सही निर्धारण हो सकेगा। क्योंकि, ज़मीन तैयार नहीं है। बंजर ज़मीन में कितना भी उन्नत बीज डाल दिया जाय। उचित प्रतिफल की आशा नहीं की जा सकती है। उसे उर्वर बनाने के लिए कई प्रकार के खाद-पानी और मौसम की आवश्यकता होती है। सिर्फ़ ऐतिहासिक दुहाई देने भर से सपने पूरे नहीं होते। बुद्ध, महावीर, नालंदा, बोध गया, वैशाली की मंचीय गुणगान सुनने में अच्छा लगता है। उससे उलट धरातल पर हो रहे उपेक्षाओं को भी टटोलने होंगे। इस संदर्भ में ज़रूरत है, दुनियाँ भर के सिनेमाई माहौल का व्यावहारिक अध्ययन करना या करवाना। संवाद स्थापित करना। ठोस और स्वागत्य निर्णय लेना। ताकि किसी भी राजनैतिक दल की सरकार या अधिकारीयों के टेन्योर (सेवा अवधि) भर की योजनायाएँ बन कर न रह जाय। ऐसा मैं इसलिए भी कह रहा हूँ कि बिहार का एक भी क्षेत्रीय/भाषाई सिनेमा अपने क्षेत्र में स्थापित नहीं है। जबकि भोजपुरी सिनेमा को साठ साल, मैथली को पचास से अधिक हो चुके हैं और मगही का तो लेखा जोखा ही नहीं है। यह दशा तब है, जब बिहार के पास पिछले चालीस वर्षों से फ़िल्म विकास और वित्त निगम जैसी संस्था उस समय से मौजूद है, जब अन्य राज्यों के पास इसकी संकल्पना भी

नहीं थी। एक से बढ़कर एक IAS अधिकारी निगम के प्रबंध निदेशक रह चुके हैं। कुछेक प्रबंध निदेशक तो राज्य के विकास आयुक्त और मुख्य सचिव तक बने। बावजूद उसके फ़िल्म निगम अपनी दीनता पर बिलख रहा है। फ़िल्म नीति उसे कैसे पुनर्जीवित करेगी? यह चुनौती अभी भी है। लेकिन मैं आशान्वित भी हूँ कि बेहतर होगा। धन्यवाद।

सादर,

रविराज पटेल

ravirajpro7@gmail.com